पुणा International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VIII Subject-Hindi

Summative Assessment Assignment-2 (2021-22)

(अपठित–विभाग)

प्र–१ अपठित गदयांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1)वास्तव में हृदय वही है, जो कोमल भावों और स्वदेश प्रेम से ओतप्रोत हो। प्रत्येक देशवासी को अपने वतन से प्रेम होता है, चाहे उसका देश सूखा, गर्म या दलदलों से युक्त हो। देश-प्रेम के लिए किसी आकर्षण की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि वह तो अपनी भूमि के प्रति मनुष्य मात्र की स्वाभाविक ममता है। मानव ही नहीं पशु-पक्षियों तक को अपना देश प्यारा होता है। संध्या समय पक्षी अपने नीड़ की ओर उड़े चले जाते हैं। देश-प्रेम का अंकुर सभी में विद्यमान है। कुछ लोग समझते हैं कि मातृभूमि के नारे लगाने से ही देश-प्रेम व्यक्त होता है। दिन-भर वे त्याग, बलिदान और वीरता की कथा सुनाते नहीं थकते, लेकिन परीक्षा की घड़ी आने पर भाग खड़े होते हैं। ऐसे लोग स्वार्थ त्यागकर जान जोखिम में डालकर देश की सेवा क्या करेंगे? आज ऐसे लोगों की आवश्यकता नहीं है।

प्रश्नः 1देश-प्रेम का अंकुर कहाँ विद्यमान रहता है ?

उत्तरः देश-प्रेम का अंकुर हर प्राणी में विद्यमान रहता है।

प्रश्नः 2.गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक लिखिए।

उत्तरः गद्यांश का शीर्षक है-सच्चा देश-प्रेम।

प्रश्नः 3.देश-प्रेम और मानव हृदय का संबंध स्पष्ट कीजिए।

उत्तरः देश-प्रेम और मानव-हृदय में अत्यंत घनिष्ठ संबंध है। कोमल भावों और देश-प्रेम से युक्त हृदय श्रेष्ठ होता है। अपनी भूमि के प्रति यह स्वाभाविक ममता हर हृदय में होती है।

प्रश्नः 4.पक्षी अपने देश के प्रति अपना लगाव कैसे प्रकट करते हैं?

उत्तरः पक्षी भी अपने देश के प्रति असीम लगाव रखते हैं। इसी लगाव के कारण, पक्षी दिन भर कहीं भी उड़े, दाना चुगें पर शाम के समय अपने घोंसले की ओर अवश्य लौट आते हैं।

प्रश्नः 5.गद्यांश के आधार पर सच्चे देश-प्रेमी की पहचान बताइए।

उत्तरः सच्चे देश-प्रेमी मातृभूमि के प्रति कोरे नारे लगाकर अपनी देशभक्ति प्रकट नहीं करते हैं। वे दूसरों को अपने त्याग और बलिदान की कहानियाँ नहीं सुनाते हैं, लेकिन आवश्यकता के समय मातृभूमि के लिए प्राणों की बाजी लगा देते हैं।

2) मानव जाति अपने उद्भवकाल से ही प्रकृति की गोद में और उसी से अपने भरण-पोषण की सामग्री प्राप्त की। सभी प्रकार के वन्य या प्राकृतिक उपादान ही उसके जीवन और जीविका के एकमात्र साधन थे। प्रकृति ने ही मानव जीवन को संरक्षण प्रदान किया। रामचंद्र, सीता व लक्ष्मण सभी ने पंचवटी नामक स्थान पर कुटिया बनाकर वनवास का लंबा समय व्यतीत किया था। वृक्षों की लकड़ी से मानव अनेक प्रकार के लाभ उठाता है। उसने लकड़ी को ईंधन के रूप में प्रयुक्त किया। इससे मकान व झोंपड़ियाँ बनाईं। इमारती लकड़ी से भवन-निर्माण, कृषि यंत्र, परिवहन, जैसे-रथ, ट्रक तथा रेलों के डिब्बे तथा फर्नीचर आदि बनाए जाते हैं। कोयला भी लकड़ी का प्रतिरूप है। वृक्षों की लकड़ी तथा उसके उत्पाद; जैसे-नारियल का जूट, लकड़ी का बुरादा, चीड़ की लकड़ी आदि का प्रयोग फल, काँच के बरतन आदि नाजुक पदार्थों की पैकिंग में किया जाता है।

प्रश्नः 1 लकड़ी और कोयले में क्या संबंध है?

उत्तरः लकड़ी और कोयले में यह संबंध है कि कोयला लकड़ी का ही बदला हुआ रूप है।

प्रश्नः 2.'भरण-पोषण' और 'भवन-निर्माण' का विग्रह करके समास का नाम बताइए।

उत्तरः भरण-पोषण = भरण और पोषण – द्वंद्व समास

भवन निर्माण = भवन और निर्माण – द्वंद्व समास

प्रश्नः 3.आदिमानव के लिए वन किस तरह लाभदायी रहे हैं?

उत्तरःआदिमानव ने वनों की गोद में जन्म लिया, वहीं पला-बढ़ा और अपने लिए भोजन प्राप्त किया। वन और उसके उत्पाद ही आदिमानव के जीने का सहारा थे। वनों ने ही आदिमानव को संरक्षण दिया।

प्रश्नः 4.वर्तमान में मनुष्य वृक्षों से किस तरह लाभ उठा रहा है?

उत्तरःवर्तमान में मनुष्य वनों से प्राप्त लकड़ी को ईंधन के रूप में प्रयोग कर रहा है। इनसे वह मकान बनाने, कृषि यंत्र, रथ, ट्रक तथा रेल के डिब्बे तथा अन्य बहुत-सी वस्तुएँ बना रहा है।

प्रश्नः 5.लकड़ी के अलावा वृक्षों के उत्पाद क्या हैं? मनुष्य इनका उपयोग किन कार्यों में कर रहा है?

उत्तरःलकड़ी के अलावा वृक्षों के अन्य उत्पाद हैं-नारियल का जूट, लकड़ी का बुरादा, चीड़ की लकड़ी आदि। इनका प्रयोग वह कल, काँच के बरतन आदि नाजुक सामानों की पैकिंग जैसे कामों में कर रहा है।

3) वहाँ वह सूर्य है जो चमकता है। तो सूर्य आखिर है क्या? वेदों में इसे एक पहिएवाले सुनहरे रथ पर सवार देवता कहा गया है, जिसे सात शक्तिशाली घोड़े पलक झपकते ही 364 लीग की रफ़्तार से दौड़ा कर ले जाते हैं। वह अपने रथ पर सवार होकर आसमान में घूमता रहता है और संसार की हर गतिविधि पर नज़र रखता है। किसने इसे बनाया, जिस पर धरती पर मौजूद जीवन पूरी तरह से निर्भर है? क्या यह मरता हुआ विशाल तारा है या कोई वैज्ञानिक चमत्कार या वाकई सूर्य देवता हैं जो वेदों की साकार आत्मा हैं और जो त्रिदेव का प्रतिनिधित्व करता है-दिन में ब्रह्मा, दोपहर में शिव और शाम में विष्णु।भारतीय पौराणिक गाथाओं के अनुसार, सूर्य के माता-पिता थे-अदिति और कश्यप। अदिति के आठ बच्चे थे। आठवाँ बच्चा अंडे की शक्ल का था। इसलिए उसका नाम रखा मार्तंड यानी मृत अंडे का पुत्र और उसका परित्याग कर दिया। वह आसमान में चला गया और खुद को वहाँ महिमामंडित कर लिया। दूसरा किस्सा यह है कि, अदिति ने एक बार अपने पहले सात पुत्रों से कहा कि वे ब्रह्मांड का सृजन करें। किंतु वे इसमें असमर्थ रहे। क्योंकि वे सिर्फ जन्म को जानते थे, मृत्यु को नहीं। जीवन चक्र स्थापित करने के लिए अमरत्व की ज़रूरत नहीं थी, सो अदिति ने मार्तंड से कहा। उन्होंने फ़ौरन दिन और रात का सृजन कर दिया, जो जीवन और मृत्यु के प्रतीक थे।

प्रश्नः 1.मार्तंड द्वारा दिन और रात के सृजन का क्या उद्देश्य था?

उत्तरःमार्तंड द्वारा दिन और रात के सृजन का उद्देश्य था—जीवन और मृत्यु का सृजन कर जीवन चक्र स्थापित करना।

प्रश्नः 2 वेदों में सूर्य का वर्णन किस तरह किया गया है?

उत्तरः वेदों में सूर्य को एक पहिएवाले रथ पर सवार देवता बताया गया है। इस रथ को सात घोड़े द्रुत गति से खींचते हैं। इस पर सवार होकर सूर्य आसमान का चक्कर लगाता हुआ संसार की हर गतिविधि देखता है।

प्रश्नः 3. भारतीय पौराणिक गाथाओं के अनुसार सूर्य क्या है?

उत्तरः पौराणिक गाथाओं के अनुसार, सूर्य अपने माता-पिता अदिति और कश्यप की आठवीं संतान है। अंडे की शक्ल होने के कारण उसका नाम मार्तंड रखा। माता-पिता द्वारा त्यागे जाने पर वह आसमान चला गया।

प्रश्नः 4. सूर्य के संबंध में प्रचलित किस्से के आधार पर सूर्य के महिमामंडन का कारण क्या है ?

उत्तरः सूर्य के महिमामंडन का कारण यह है कि अदिति के कहने पर सूर्य के सातों पुत्र ब्रहमांड का सृजन करने में असफल रहे, पर सूर्य ने दिन-रात का सृजन कर जीवन चक्र स्थापित कर दिया और महिमा मंडित हो गया।

प्रश्नः5 गदयांश का उचित शीर्षक दीजिए |

उत्तर : भारतीय पौराणिक कथा

*** निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए|**

1) तरुणाई है नाम सिंधु की उठती लहरों के गर्जन का,
चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का।
विफल प्रयासों से भी दूना वेग भुजाओं में भर जाता,
जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरंतर नाता।
पर्वत के विशाल शिखरों-सा यौवन उसका ही है अक्षय,
जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।
अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाए तूफ़ानों में,
सहनशीलता दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।

(क) कवि ने किसका आह्वान किया है?
(ख) तरुणाई की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है ?
(ग) चट्टानों से टक्कर लेने का क्या तात्पर्य है?
(घ) मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ते हैं और कैसे?
(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए-'जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।'
(च) कवि ने युवाओं का अह्वान क्यों किया है ?

उत्तर:

(क) कवि ने युवाओं का आह्वान किया है।
(ख) तरुणाई की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है-उत्साह, कठिन परिस्थितियों का सामना करना, हार से निराश न होना, दृढ़ता, सहनशीलता आदि।
(ग) चट्टानों से टक्कर लेने का तात्पर्य है-रुढ़ियों के खिलाफ संघर्ष करना।
(घ) मार्ग की रुकावटों को युवा शक्ति तोड़ती है। जिस प्रकार झरने चट्टानों को तोड़ते हैं, उसी प्रकार युवा शक्ति अपने पंथ की रुकावटों को खत्म कर देती है।
(ङ) इसका अर्थ है कि युवा शक्ति जनसामान्य में उत्साह का संचार कर देती है।
(च) कवि ने युवाओं का आह्वान किया है क्योंकि उनमें उत्साह व संघर्ष करने की शक्ति होती है।

2) शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न सबका सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिएँ या कि मिट जाएँ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को,
जीत, या कि ख़ुद मर के।
किसने कहा पाप है? अनुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना?

प्रश्नः
(क) कवि के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक शर्त है?
(ख) तेजस्वी किस प्रकार समय को छीन लेते हैं?
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए?
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं ?
(ङ) यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो आपको क्या करना चाहिए?
(च) उपयुक्त शीर्षक दीजिए।
उत्तर:
(क) कवि के अनुसार, शांति के लिए आवश्यक है कि संसार में संसाधनों का वितरण समान हो।
(ख) अपने अनुकूल समय को तेजस्वी जीतकर छीन लेते हैं।
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को संघर्ष करना पड़ता है। अपना हक माँगना पाप नहीं है।
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए इसलिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि वे अपने हक को पा सकें, अपने प्रति अन्याय को खत्म कर सकें।
(ङ) यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो हमें अपने अधिकार के लिए लड़ना चाहिए। इसके लिए हमें हथियार उठाने में भी संकोच नहीं करना चाहिए।
(च) शीर्षक- अधिकार

लेखन-विभाग

* निबंध

1) जीवन में शिक्षक का महत्व

शिक्षक एक व्यक्ति को कुशल नागरिक बनाता है। शिक्षक वह प्रकाश है जो सभी के ज़िन्दगी में रोशनी भर देता है। शिक्षक एक मोमबत्ती रूपी ज्ञान का उजाला है जो लोगों को अँधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाती है। शिक्षक की भूमिका किसी से छिपी नहीं है। शिक्षक अपने शिक्षा के ज़रिये व्यक्ति ,समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है। उनकी शिक्षा की वजह से व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार होता है जिसकी वजह से वह अपने ज़िन्दगी में कुछ कर गुजरने की चाहत रखता है। शिक्षक एक खूबसूरत आईने की तरह है जिससे व्यक्ति अपने वजूद की पहचान कर पाता है। शिक्षा वह मज़बूत ताकत है जिससे हम समाज को सकारात्मक बदलाव की ओर ले जा सकते है।

शिक्षक एक सभ्य समाज का निर्माण करता है। एक बच्चे के जीवन में उसके माता -पिता उसके प्रथम शिक्षक होते है। शिक्षा की एहमित सबसे पूर्व माता -पिता ही कराते है। उसके पश्चात बच्चा विद्यालय में शिक्षक से रुबरुं होते है जो हर विषय संबंधित ज्ञान बच्चों को प्रदान करता है। अगर छात्र मार्ग भटक जाए तो शिक्षक अपने ज्ञान से उसे सही मार्ग पर ले जाता है। शिक्षक विद्यार्थिओं का मार्ग दर्शक है। ज़िन्दगी के कठिन मोड़ पर जब हम रास्ता भटक जाते है तो कोई न कोई इंसान शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाता है। कम उम्र में बच्चे का जीवन गीली मिटटी की तरह होता है। तब शिक्षक एक कुम्हार की तरह उसे शिक्षा रूप हाथों से एक मज़बूत आकार प्रदान करता है।

शिक्षक विद्यार्थिओं को आने वाले बेहतर भविष्य के लिए तैयार करते है। विद्यार्थी के मन में विषय संबंधित और जीवन संबंधित कोई भी दुविधा आये तो शिक्षक उस दुविधा को हल करने में हर मुमकिन कोशिश करता है। शिक्षक की मेहनत की वजह से कोई डॉक्टर ,कोई इंजीनियर ,कोई वकील ,पायलट ,सैनिक इत्यादि बन जाते है। अगर शिक्षक नहीं होंगे तो यह पद पर कोई व्यक्ति कार्यरत नहीं हो पाएंगे । शिक्षक इंसान को अच्छे और बुरे के बीच फर्क करना सिखाते है। वह अधर्म ,घृणा ,ईर्ष्या ,हिंसा इन बुरी आदतों से विद्यार्थिओं को दूर रहना सिखाते है। शिक्षक शिष्टता ,सहनशीलता ,धैर्य से जीवन के संघर्षों से पार करना सिखाते है।

शिक्षक हमे जीवन में अनुशासन का पाठ पढ़ाते है। समय को ठीक तरीके से जो इंसान व्यवसस्थित कर पाए वह ज़िन्दगी में सफलता को छूता है। समय का ज्ञान करना हमे शिक्षक सिखाते है। इसलिए विद्यार्थी जीवन में टाइम टेबल की बड़ी एहमियत होती है। भविष्य में भी मनुष्य इस सीख को कभी नहीं भूलता है। इससे वह कार्य को समन्वय कर सकता है।शिक्षक एक व्यक्ति में राज्य या कोई भी क्षेत्र का नेतृत्व करने के गुण सिखाती है। शिक्षक द्वारा दी गयी शिक्षा सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण में सहायक होता है। अध्यापक को हमेशा अपने कर्त्तव्य का पालन करना पड़ता है। उनकी शिक्षा की वजह से एक शिक्षित वर्ग और समाज तैयार होता है। विद्यार्थी बड़े होकर अपने शिक्षक को कभी नहीं भूलते है। शिक्षक और विद्यार्थी का बंधन अटूट होता है। यह बन्धन सम्मान और विश्वास का होता है। विद्यार्थी शिक्षक के पैर छूकर उनका सम्मान करना कदापि नहीं भूलते है।

आजकल के शिक्षण प्रणाली में काफी बदलाव आया है। पहले के समय में अध्यापक श्यामपट का उपयोग करते थे। तब बच्चे शिक्षक से सवाल करने में हिचकिचाते थे लेकिन आज के दौर में परिवर्तन आया है। आज बच्चे जिज्ञासु और उत्सुक है। वह शिक्षकों से सवाल पूछते है जो की एक सकारात्मक बदलाव है। आज अध्यापक पढ़ाने के लिए स्मार्ट बोर्ड का उपयोग करते है। स्मार्ट बोर्ड से पढ़ाई आसान हो गयी है। शिक्षक पढ़ाई संबंधित विषयों को पढ़ाने और समझाने के लिए उन्हें वास्तविक जीवन के उदाहरण के साथ जोड़कर समझाते है ताकि बच्चों को सारे तथ्य अच्छे से समझ आ जाये।जैसे हमारा सांस लेना आवश्यक है। इसके बैगर हम जी नहीं सकते है। वैसे ही अध्यापक के बिना विद्यार्थी अधूरे है। शिक्षक नहीं होंगे तो वह विद्या प्राप्त करने में असमर्थ हो जाएंगे। पूरे भारत वर्ष में ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। विभिन्न प्रकार के सांस्कृकित कार्यक्रम आयोजित किये जाते है।

शिक्षक नहीं तो देश की प्रगति भी नहीं। शिक्षक अपना सारा जीवन में बच्चो के विकास में समर्पित कर देते है। उनका सम्मान विद्यार्थी तह उम्र करेंगे। शिक्षक वह ज्ञान का प्रकाश है जो अन्धकार की राह को चीरकर ज्ञान की रोशनी भर देती है।

2) दीवाली

दीवाली भारत का सबसे महत्त्वपूर्ण त्यौहार माना जाता है । दीवाली शब्द दीपावली का अपभ्रश है, जिसका अर्थ दीपों की पंक्ति होता है । यह त्यौहार कार्तिक मारन के मध्य में अर्थात् कार्तिक मास की अमावस्या को मनाया जाता है । इसी समय जाड़े का प्रारम्भ होने लगता है ।इस त्यौहार के बारे में भी लोगों के विभिन्न मत हैं |इस दिन रावण पर विजय प्राप्त करके श्रीरामचन्द्र जी अयोध्या पहुंचे थे । अयोध्यावासियो ने अपने घरों को खूब सजाया और दीपो की पंक्ति से जगमगा कर श्रीरामचन्द्र जी का बड़े आदर और सम्मान से स्वागत किया । इसी याद में हर वर्ष लोग दीवाली का त्यौहार हर्षोल्लास से मनाते हैं ।

यह त्यौहार बड़े शान और शौकत से मनाया जाता है । लोग काफी समय पहले से अपने-अपने घरों और दुकानों की सफाई करते है, दीवारों पर सफेदी कराते हैं तथा दरवाजो, खिड़कियो और फर्नीचर आदि पर रग-रोगन करते हैं । त्यौहार के दिन लोग घरो औरं दुकानो को खूब सजाते हैं । तरह-तरह के पकवान और मिठाइयाँ बनाई जाती हैं । शाम को लोग बिजली के बच्चो, मोमबत्तियों और तेल के दियो से घर का कोना-कोना सजा देते हैं । दीवाली की रात लोग अपने-अपने घरों और दुकानो को खूब रोशन करते हैं । साधारण लोग मिट्टी के दीपकों और मोमबत्तियों से तथा बड़े और समृद्ध लोग बिजली के रंगीन बच्चों की झालर से रोशनी करते हैं । तरह-तरह के पटाखे और आतिशबाजी पर बड़ी धनराशि व्यय की जाती है । शाम से ही हर तरफ से पटाखों का शोर सुनाई पड़ने लगता है । सभी लोग नए और अच्छे-अच्छे वस्त्र और परिधान पहने बडी प्रसन्न मुद्रा में दिखाई देते हैं ।

रात्रि के समय घरों और दुकानो में धन की देवी लक्ष्मी जी का पूजन बड़ी श्रद्धा से किया जाता है । खील-बताशों का इस दिन विशेष महत्त्व होता है । तरह-तरह के पकवान और मिठाइयों का भोग लगाया जाता है और लक्ष्मी जी की आरती उतारी जाती है । पूजन के बाद घर के लोग प्रसाद के रूप में खील-बताशे तथा मिठाइयाँ खाते हैं । अपने-अपने रिश्तेदारों और मित्रों के घर मिठाई और खील-बताशे भेजे जाते है । नौकरों को बख्शीश दी जाती है और भिखारियों को दान दिया जाता है ।

इस त्यौहार के अनेक लाभ है । यह त्यौहार वर्षा ऋतु की समाप्ति के बाद आता है । बरसात में मक्खी, मच्छर और तमाम तरीके के कीडे-मकौडे पैदा हो जाते है । इस त्यौहार के कारण घरों की खूब सफाई और सफेदी आदि होने से कीडो-मकोडों का सफाया हो जाता है और घर फिर साफ-सुधरे हो जाते है ।व्यापारी, कुम्हार, खिलौने बनाने वाले आदि लोगों को इस त्यौहार के कारण अच्छी खासी आमदनी हो जाती है । यद्यपि इस त्यौहार के अनेक लाभ हैं, लेकिन यह बुराइयों से परे नहीं है । लोग पटाखों और आतिशबाजी तथा सजावट और रोशनी पर अनाप-नाप धन व्यय कर देते हैं और बाद में पछताते हैं । जुआ खेलना इस त्यौहार की सबसे बडी बुराई है ।अनेक लोगों का अंधविश्वास है कि यदि वे दीवाली के अवसर पर जुए में कुछ धन जीत जायें तो, सारे साल उन्हें धन मिलता रहेगा । इस कारण वे अपने भाग्य की परीक्षा करते हैं और कभी-कभी बहुत-सा धन गवां बैठते हैं ।

दीवाली बड़ा उपयोगी त्यौहार है । इस अवसर पर जुआ खेलने पर पाबन्दी लगानी चाहिए । जुआ इस पुनीत त्यौहार पर कलंक है । दीपावली जैसे त्यौहारों के अवसर पर ही राष्ट्र की सामाजिक और धार्मिक भावना व्यक्त होती हैं ।

3) ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पर निबंध

यकीनन डॉ. अब्दुल कलाम ने अपने इस कथन को अपने निजी जीवन में चरितार्थ कर दिखाया। सूर्य की तरह जलकर ही वह सूर्य की तरह चमके और इस देश को अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से आलोकित कर अमर हो गए। साधारण पृष्ठभूमि में पले-बढ़े कलाम तमाम अभावों से दो-चार होने के बावजूद विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए न सिर्फ एक सफल और महान वैज्ञानिक बने, बल्कि देश के सर्वोच्च पद तक भी पहुंचे। वह जीवन की कठिनाइयों के सामने न तो कभी कमजोर पड़े और न ही इनसे घबराए।

उनका जीवन दर्शन कितना व्यावहारिक एवं उच्च था, इसका पता उनके इस कथन से चलता है –"इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी हैं।" सच्चे अर्थों में वह एक उच्च कोटि के राष्ट्रनायक थे।

डॉ. कलाम ने फर्श से अर्श तक का सफर तय किया। 15 अक्टूबर, 1931 को भारत के तमिलनाड प्रांत के रामेश्वरम में एक गरीब तमिल मुस्लिम परिवार में इस असाधारण प्रतिभा ने जन्म लिया। जन्म के समय शायद ही किसी ने सोचा हो कि यह नन्हा बालक आगे चलकर एक राष्ट्र निर्माता के रूप में भारत को बुलंदी पर ले जाएगा। कलाम के पिता जैनल आबिदीन पेशे से मछआरे थे तथा एक धर्मपरायण व्यक्ति थे।

उनकी माता आशियम्मा एक साधारण गृहिणी थीं तथा एक दयालु एवं धर्मपरायण महिला थीं। मां-बाप ने अपने इस सबसे छोटे बेटे का नाम अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम रखा। जीवन के अभाव कलाम के प्रारंभिक जीवन से ही जुड़े हुए थे। संयुक्त परिवार था और आय के स्रोत सीमित थे। कलाम के पिता मछुआरों को किराए पर नाव दिया करते थे। इससे जो आय होती थी, उसी से परिवार का भरण-पोषण होता था। विपन्नता के बावजूद माता-पिता ने कलाम को अच्छे संस्कार दिए। कलाम के जीवन पर उनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले ही पढ़े-लिखे नहीं थे, किन्तु उनके दिए संस्कार कलाम के बहुत काम आए।

पांच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय से उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्रारंभ की। यहीं उन्हें उनके शिक्षक इयादराई सोलोमन से एक नेक सीख मिली_"जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीनों शक्तियों को भली-भांति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित कर लेना चाहिए।" नन्हें कलाम ने इस सीख को आत्मसात कर आगे का सफर शुरू किया। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा के दौरान जिस प्रतिभा का परिचय दिया, उससे उनके शिक्षक बहुत प्रभावित हुए। प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ही अर्थाभाव आड़े आया तो उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखने एवं परिवार की आय को सहारा देने के लिए अखबार बांटने का काम किया। प्रारंभिक शिक्षा के बाद कलाम ने रामनाथपुरम के एक विद्यालय से हाईस्कूल की शिक्षा पूरी की।

विज्ञान में उनकी गहरी रूचि शुरू से थी। वर्ष 1950 में उन्होंने तिरुचरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज में प्रवेश लिया और वहां से बीएससी की डिग्री प्राप्त की। अपने अध्यापकों की सलाह पर उन्होंने स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए 'मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी', चेन्नई का रुख किया। वहां पर उन्होंने अपने सपनों को आकार देने के लिए एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का चयन किया।मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' से तालीम पूरी करने के बाद एक उदीयमान युवा वैज्ञानिक के रूप में कलाम ने विज्ञान के क्षेत्र में अपने स्वर्णिम सफर की शुरुआत की। वर्ष 1958 में

उन्होंने बंगलुरू के सिविल विमानन तकनीकी केन्द्र से अपनी पहली नौकरी की शुरूआत की, जहां उन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए एक पराध्वनिक लक्ष्यभेदी विमान का डिजाइन तैयार किया। कलाम के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब वर्ष 1962 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) से जुड़ने का मौका मिला। जहां एक वैज्ञानिक के रूप में अपनी उपलब्धियों से डॉ. कलाम ने भारत के गौरव को बढ़ाया, वहीं भारत के राष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल सराहनीय रहा।

वर्ष 2002 में डॉ. कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। उन्होंने देश भर में घूम-घूम कर असंख्य छात्रों को प्रेरित करने, उनके सपने जगाने और उन्हें पूरा करने का जो मंत्र दिया, उसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है। उन्होंने यह भी दिखाया कि अपना काम करते हुए विवादों से कैसे दूर रहा जा सकता है। एक अराजनीतिक व्यक्ति होते हुए भी डॉ. कलाम राजनीतिक दृष्टि से सम्पन्न थे। अपनी इसी दृष्टि के बल पर उन्होंने भारत की कल्याण संबंधी नीतियों का जो खाका खींचा, वह अद्भुत है। उनकी सोच राष्ट्रवादी थी। वह एक महान देश हितैषी थे। भारत को एक सबल और सक्षम राष्ट्र बनाना उनका सपना था।

आज कलाम साहब हमारे बीच भले ही नहीं हैं, किन्तु वह देश के नन्हें-मुन्नों की चमकती आंखों, युवकों की आंखों में झिलमिलाते सपनों और बुजुर्गों की उम्मीदों में सदा अमर रहेंगे। हम उनके सपनों का भारत बनाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

* पत्र-लेखन

1)विद्यालय में योग-शिक्षा का महत्त्व बताते हुए किसी समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक जागरण,
सेक्टर 30,
दिनांक-26 अप्रैल, 2019
चण्डीग़ढ़, ज़िरखपूर।
विषय- योग-शिक्षा का महत्त्व।
महोदय,

जन-जन की आवाज, जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रसिद्ध आपके पत्र के माध्यम से मैं विद्यालय में योग-शिक्षा के महत्त्व को बताना चाहती हूँ और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती हूँ।

योग-शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगें। योग शिक्षा उनके स्वास्थय के लिए बहुत अधिक लाभदायक है। योग के माध्यम से वे अपने शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकाल सकते हैं और सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण कर सकते हैं। योग के जरिए वे अपने तन-मन दोनों को स्वस्थ रख सकते हैं और उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायता मिलती रहेगी।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने समाचार-पत्र के माध्यम से पाठकों को योग के प्रति जागरूक करे और लोगों को योग-शिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह करें।
धन्यवाद।
भवदीया
(नाम, पता, दूरभाष)

2) डाकिए की डाक बाँटने के लिए अनियमितता की शिकायत।

सेवा में
डाकपाल महोदय
अंकुर विहार डाकखाना
लोनी, गाजियाबाद।
विषय – डाकिए की डाक बाँटने की अनियमितता के विषय में पत्र
महोदय
सविनय निवेदन यह है कि हमारे क्षेत्र अंकुर विहार गाजियाबाद में गत पाँच-छह महीने से डाक वितरण अनियमितता से स्थानीय निवासी परेशान हैं।
इस क्षेत्र में प्रतिदिन डाक वितरण नहीं होता। डाकिए सप्ताह में केवल एक या दो बार आते हैं तथा मुहल्ले के गेट पर खड़े चौकीदारों को सभी पत्र थमा कर चले जाते हैं। कई बार पत्र गलत पते पर डालकर चले जाते हैं जिससे और भी अधिक परेशानी उठानी पड़ती है। जरूरी डाक तथा तार समय पर न मिलने से कई लोगों को नौकरियों से हाथ धोना पड़ा तथा कुछ बच्चों के दाखिले भी नहीं हो पाए। ये सभी डाकिए त्योहार पर रुपए माँगने तो आ जाते हैं पर डाक देने नहीं। किसी-किसी ने तो मनी आर्डर की राशि भी पूरी न मिलने की शिकायत की है।
आशा है आप उक्त अनियमितताओं को दूर करने के लिए उचित कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद
भवदीय
आयुष रंजन तिवारी

3)आपके जन्म दिन पर आपके मामा जी ने आपको एक सुंदर उपहार भेजा है। इस उपहार के लिए धन्यवाद एवं कृतज्ञता व्यक्त कीजिए।

जी० 501 सुंदर विहार
नई दिल्ली
दिनांक …...
पूज्य मामा जी
सादर प्रणाम

मेरे जन्म दिन पर आपके द्वारा भेजा गया बधाई संदेश तथा एक सुंदर हाथ-घड़ी का उपहार मिला। आपके द्वारा भेजा गया यह उपहार मेरे सभी मित्रों एवं सहपाठियों को भी काफ़ी पसंद आया। मैं तो आशा कर रहा था कि इस बार आप मेरे जन्म-दिन पर स्वयं उपस्थित होकर मुझे स्नेह आशीर्वाद देंगे, परंतु किसी कारण आप न आ सके। जब आपको उपहार प्राप्त हुआ, तो मेरी सारी शिकायत दूर हो गई और आपके प्रति कृतज्ञता से भर गया। आपके द्वारा भेजा गया उपहार मुझे आपके स्नेह का स्मरण कराता रहेगा।

इतने सुंदर उपहार के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। आदरणीय मामा जी को सादर प्रणाम, ओजस्व को स्नेह।
आपका भानजा
क ख ग

* विज्ञापन तैयार कीजिए।

1) समीर ए०सी०. बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

2) मोहित' बैग बनाने वाली कंपनी के लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए।

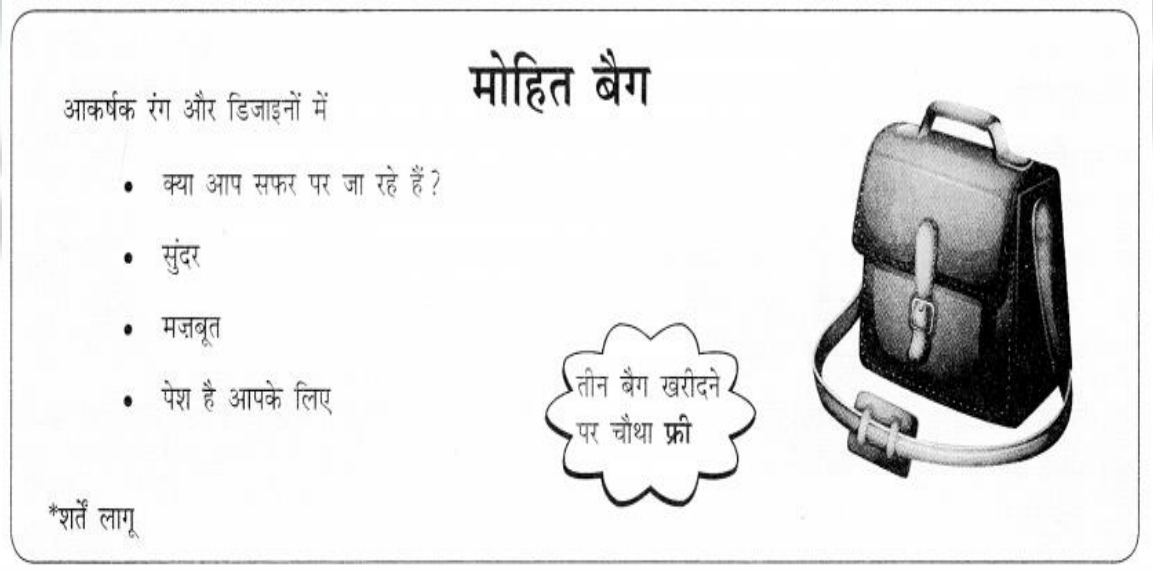

3) 'केश पुकार' तेल बनाने वाली कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार कीजिए।

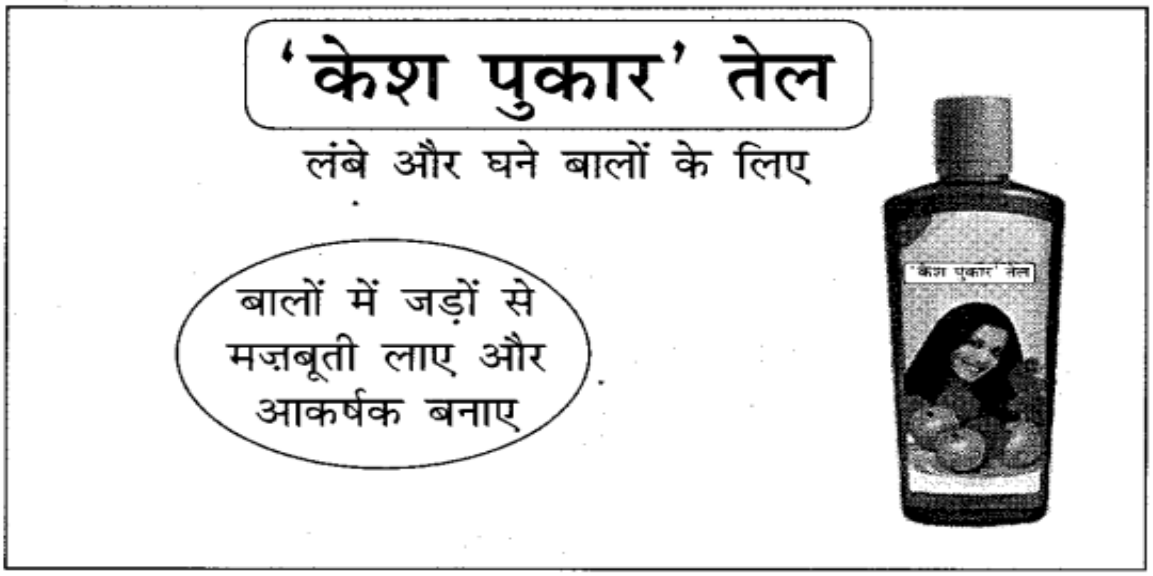

* संवाद लेखन

1) पिता और पुत्र में वार्तालाप

पिता- बेटे अतुल, कैसा रहा तुम्हारा परीक्षाफल ?
पुत्र- बहुत अच्छा नहीं रहा, पिताजी।
पिता- क्यों ? बताओ तो कितने अंक आए हैं ?
पुत्र- हिन्दी में सत्तर, अंग्रेजी में बासठ, कामर्स में अस्सी, अर्थशास्त्र में बहत्तर.....
पिता- अंग्रेजी में इस बार इतने कम अंक क्यों हैं ? कोई प्रश्न छूट गया था ?
पुत्र- पूरा तो नहीं छूटा ..... सबसे अंत में 'ऐस्से' लिखा था, वह अधूरा रह गया।
पिता- तभी तो..... । अलग-अलग प्रश्नों के समय निर्धारित कर लिया करो, तो यह नौबत नहीं आएगी। खैर, गणित तो रह ही गया।
पुत्र- गणित का पर्चा अच्छा नहीं हुआ था। उसमें केवल पचास अंक आए हैं।
पिता- यह तो बहुत खराब बात है। गणित से ही उच्च श्रेणी लाने में सहायता मिलती है।
पुत्र- पता नहीं क्या हुआ, पिताजी। एक प्रश्न तो मुझे आता ही नहीं था। शायद पाठ्यक्रम से बाहर का था।
पिता- एक प्रश्न न करने से इतने कम अंक तो नहीं आने चाहिए।
पुत्र- एक और प्रश्न बहुत कठिन था। उसमें शुरू से ही ऐसी गड़बड़ी हुई कि सारा प्रश्न गलत हो गया।
पिता- अन्य छात्रों की क्या स्थिति है ?
पुत्र- बहुत अच्छे अंक तो किसी के भी नहीं आए पर मुझसे कई छात्र आगे हैं।
पिता- सब अभ्यास की बात है बेटे ! सुना नहीं 'करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।' तुम तो स्वयं समझदार हो। अब वार्षिक परीक्षाएँ निकट है। दूरदर्शन और खेल का समय कुछ कम करके उसे पढ़ाई में लगाओ।
पुत्र- जी पिताजी ! मैं कोशिश करूँगा कि अगली बार गणित में पूरे अंक लाऊँ।
पिता- मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है।

2)बढ़ती महँगाई को लेकर दो नागरिकों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

हरिप्रसाद – अरे पंकज क्या लाए हो बाजार से?
पंकज – जी, अंकल ज्यादा कुछ नहीं, बस थोड़ी सी दालें और चावल ही लाया हूँ।
हरिप्रसाद – अब इस बढ़ती महँगाई ने तो सबका हाथ ही तंग कर दिया है।
पंकज – कुछ न पूछिए! सभी चीजों के दाम आसमान को छू रहे हैं, कोई भी चीज सस्ती नहीं है। कुछ दालों के तो 200 रुपए किलो तक पहुँच गए हैं।
हरिप्रसाद – दालें ही क्या सभी चीजें इतनी महँगी हो गई हैं कि वे आम आदमी की पहुँच से बाहर होती जा रही हैं।
पंकज – पर मेरी एक बात समझ में नहीं आती। महँगाई को रोकने के लिए सरकार क्यों कुछ नहीं कर रही है?
हरिप्रसाद – अरे भैया! मुझे तो लगता है दाल में कुछ काला है। वरना सरकार चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकती। महँगाई के खिलाफ़ कानून बना सकती है। चीजों के दाम तय कर सकती है।
पंकज – यही नहीं, उचित दाम से अधिक मूल्य वसूलने वालों को धर पकड़ भी सकती है।
हरिप्रसाद – हाँ, सरकार आए दिन कुछ न कुछ बयान अवश्य देती है। कभी वायदे करती है, कभी योजनाएँ बनाती है, पर न तो वे वायदे कभी पूरे होते हैं और न ही वे योजनाएँ।
पंकज – आश्चर्य की बात यह है कि विपक्षी पार्टियाँ भी सरकार पर दबाव डालने के लिए कुछ नहीं कर रही हैं।

3) महारानी और सेविकाओ के बीच का संवाद लिखिए |

महारानी: (एक सेविका से) मालिन कहाँ है? जरा बुला तो सही, उस मालिन की बच्ची को।
मालिन: (डरती हुई सेविका के साथ महारानी के चरणों में शीश नवाते हुए) आदेश हो महारानी।
महारानी: अरी तू मालिन है कि नागिन?
मालिन: जो भी हूँ हुजूर की सेविका हूँ, राजमाता! महारानी : सेविका नहीं है तू, जान की दुश्मन है हमारी।
मालिन: हे भगवान, हे भगवान यह क्या कह रही हैं राजमाता! मेरा अपराध तो बताइए।
महारानी: अब अपराध पूछ रही है। चोरी और सीना जोरी। देख हमारे शरीर पर नील पड़ गए हैं। हम रातभर सो नहीं सके।
एक सेविका: ऐसा क्यों हुआ राजमाता!
दूसरी सेविका: ऐसा क्यों हुआ राजमाता!
तीसरी सेविका: स्वास्थ्य तो ठीक है राजमाता का?
चौथी सेविका: कोई चिंता तो नहीं राजमाता आपको?
महारानी: अरी, चिंता-विंता नहीं। इस मालिन के कारण हम रात-भर सो नहीं सके। करवट-पर-करवट बदलते रहे। जगह-जगह से हमारी छाल छिल गई है।
मालिन: क्षमा माँगती हूँ राजमाता! क्षमा माँगती हूँ।
एक सेविका: क्या मालिन फूलों की सेज सजाना भूल गई थी राजमाता?
महारानी: नहीं, यह निर्दयी फूलों की सेज लगाना तो नहीं भूली पर ऐसे फूल चुनकर लाई, जिनसे हमारे सारे शरीर पर नील पड़ गए।

व्याकरण-विभाग

1) विरामचिह्न

हिंदी में विराम चिह्न बहुत महत्वपूर्ण है विराम चिह्न का उपयोग लिखनेके समय उपयोग किया जाता है यह वाक्य के प्रकार और उसके स्थान के बारे मे भी जानकारी देता हैं। विराम चिह्न वाक्य के अनुसार बदलते है।

दुसरे शब्दो मे यह कह सकते है कि भाषा में स्थान -विशेष पर रुकने अथवा उतार -चढ़ाव आदि दिखाने के लिए जिन चिन्हों का प्रयोग किया जाता है उन्हें ही ' विराम चिन्ह ' कहते है-

1) **पूर्ण विराम** (।) (Full Stop)

2) **अल्प विराम** (,) (Comma)

3) **अर्ध विराम** (;) (Semicolon)

4) **प्रशनवाचक चिन्ह** (?) (Question Mark)

5) **विस्मयादिवाचक चिन्ह** (!) (Exclamation Mark)

6) **निर्देशक** (—) (Dash)

7) **योजक** (-) (Hyphen)

8) **उद्धरण चिन्ह** (" ") (Quotation Mark)

9) **विवरण चिन्ह** (:-) (Sign of Following)

*** निम्नलिखित विराम-चिहनों के नाम लिखिए।**

1) (-)- रेखांकन चिहन
2) (।)- पूर्ण विराम
3) (:)- उपविराम
4) (-)- योजक चिहन
5) (" ")- उदधरण चिहन
6) (०)- लाघव चिहन
7) (;)- अर्धविराम
8) (,)- अलप विराम
9) (?)- प्रश्नसूचक चिहन
10) (!)- विस्मयादिबोधक चिहन
11) (())- कोष्ठक चिहन

2) मुहावरा की परिभाषा

ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।

साधारण अर्थ में - मुहावरा किसी भाषा में आने वाला वह वाक्यांश है, जो अपने शाब्दिक अर्थ को न बताकर किसी विशेष अर्थ को बताता है।

1)**अँगारे बरसना**- अत्यधिक गर्मी पड़ना।
- जून मास की दोपहरी में अंगारे बरसते प्रतीत होते हैं।

2)**गारों पर पैर रखना**- कठिन कार्य करना।
- युद्ध के मैदान में हमारे सैनिकों ने अंगारों पर पैर रखकर विजय प्राप्त की।

3)**अँगारे सिर पर धरना**- विपत्ति मोल लेना।
- सोच-समझकर काम करना चाहिए। उससे झगड़ा लेकर व्यर्थ ही अंगारे सिर पर मत धरो।

4)अँगूठा चूसना– बड़े होकर भी बच्चों की तरह नासमझी की बात करना।
- कभी तो समझदारी की बात किया करो। कब तक अंगूठा चूसते रहोगे?

5)आस्तीन का साँप– कपटी मित्र।
- प्रदीप से अपनी व्यक्तिगत बात मत कहना, वह आस्तीन का साँप है; क्योंकि आपकी सभी बातें वह अध्यापक महोदय को बता देता है।

6)कान भरना– चुगली करना।
- मोहन ने सोहन से कहा कि आज साहब नाराज हैं, किसी ने उनके कान भरे हैं।

7)गाल बजाना– डींग मारना।
- केवल गाल बजाने से सफलता नहीं मिल सकती, इसके लिए परिश्रम भी परम आवश्यक है।

8)घी के दीये जलाना– खुशी मनाना।
- अपने प्रतिद्वन्द्वी की हार पर सुनील ने घी के दीये जलाए।

9)जी–जान लड़ाना– बहुत परिश्रम करना।
- हमने तो कार्यक्रम की सफलता के लिए जी–जान लड़ा दी, किन्तु उन्हें कोई बात पसन्द ही नहीं आती।

10)दंग रह जाना- आश्चर्यचकित होना।
- बाबा के चमत्कारों को देखकर मैं तो दंग रह गया।

11)दाँत खट्टे करना– हरा देना।
- भारतीय सैनिकों ने कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

12)पानी फेर देना– निराश कर देना।
- अनमोल ने विद्यालय छोड़कर अपने पिता की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

13)बाँछे खिल जाना– प्रसन्नता से भर उठना।।
- अपनी प्रोन्नति का समाचार सुनकर शशांक की बाँछे खिल गईं।

14)हवा से बातें करना– बहुत तेज गति से दौड़ना।
- चेतक राणा के सवार होते ही हवा से बातें करने लगता था।

15)होश उड़ जाना- घबरा जाना।
- सामने से शेर को आता देखकर शिकारी के होश उड़ गए।

➢ लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति का अर्थ होता है-लोक की उक्ति अर्थात लोगों द्वारा कही गई बात। इसमें लौकिक जीवन का सत्य एवं अनुभव समाया होता है, ये स्वयं में एक पूर्ण वाक्य होती है; जैसे-अधजल गगरी छलकत जाए। इसका अर्थ है-कम जानकार द्वारा अपने गुणों का बखान करना।

➢ लोकोक्ति के कुछ प्रचलित उदाहरण

1) अंधों में काना राजा (मूर्खा में कम पढ़ा लिखा व्यक्ति) – हमारे गाँव में एक कंपाउंडरे ही लोगों का इलाज करता है, सुना नहीं है-अंधों में काना राजा।
2) अंधा चाहे दो आँखें (जिसके पास जो चीज नहीं है, वह उसे मिल जाना) – आयुष को एक घर की चाह थी, वह उसे मिल गया ठीक ही तो है–अंधा चाहे दो आँखें।
3) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत (काम खराब हो जाने के बाद पछताना बेकार है) – पूरे वर्ष तो पढ़े नहीं अब परीक्षा में फेल हो गए, तो आँसू बहा रहे हो। बेटा, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।।
4) आटे के साथ घुन भी पिस जाता है (अपराधी के साथ निर्दोष भी दंड भुगतता है) – क्षेत्र में दंगा तो गुंडों ने

मचाया, पुलिस दुकानदारों को भी पकड़कर ले गई। इसे कहते हैं, आटे के साथ घुन भी पिस जाता है।

5) आगे नाथ न पीछे पगहा (जिम्मेदारी का न होना) – पिता के देहांत के बाद रोहन बिलकुल स्वतंत्र हो गया है। आगे नाथ न पीछे पगहा।।

6) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (कहीं का न रहना) – बार-बार दल-बदल करने वाले नेता की स्थिति धोबी के कुत्ते ' जैसी हो जाती है, वह ने घर का न घाट का रह जाता है।

7) खोदा पहाड़ निकली चुहिया (अधिक परिश्रम कम लाभ) – सारा दिन परिश्रम के बाद भी कुछ नहीं मिला।

8) आ बैल मुझे मार (जान बूझकर मुसीबत मोल लेना) – बेटे के जन्मदिन पर पहले सबको बुला लिया अब खर्चे का रोना रोता है। सच है आ बैल मुझे मार।

9) नाच न जाने आँगन टेढ़ा (काम तो आता न हो, दूसरों में दोष निकालना) – काम करना तो आता नहीं, कहते हो औजार खराब है। इसी को कहते हैं नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

10) भीगी बिल्ली बनना (दबकर रहना) – लाला की नौकरी करना है, तो भीगी बिल्ली बनकर रहना पड़ेगा।

➢ कारक

कारक	वभक्ति या कारक चह्न
1 कर्ता	ने
2. कर्म	को
3. करण	से, द्वारा
4.सम्प्रदान	को, के लिए
5. अपादान	से
6. सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, रो, ना, ने, नी
7. अधिकरण	में, पर
8. सम्बोधन	हे, हो, अरे, अजी, अहो आदि।

* कर्ता कारक

i) राम ने पत्र लिखा।

(ii) हम कहाँ जा रहे हैं।

(iii) रमेश ने आम खाया।

(iv) सोहन किताब पढ़ता है।

(v) राजेन्द्र ने पत्र लिखा।

(vi) अध्यापक ने विद्यार्थियों को पढ़ाया।

(vii) पुजारी जी पूजा कर रहे हैं।

(viii) कृष्ण ने सुदामा की सहायता की।

* कर्म कारक

जैसे –

(i) अध्यापक , छात्र को पीटता है।

(ii) सीता फल खाती है।

(iii) ममता सितार बजा रही है।

(iv) राम ने रावण को मारा।

(v) गोपाल ने राधा को बुलाया।

(vi) मेरे द्वारा यह काम हुआ।

(vii) कृष्ण ने कंस को मारा।

(viii) राम को बुलाओ।

(ix) बड़ों को सम्मान दो।
(x) माँ बच्चे को सुला रही है।
(xi) उसने पत्र लिखा।

*** करण कारक**

जैसे –

(i) बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
(ii) बच्चा बोतल से दूध पीता है।
(iii) राम ने रावण को बाण से मारा।
(iv) सुनील पुस्तक से कहानी पढ़ता है।
(v) कलम से पत्र लिख है।

*** संप्रदान कारक–**

(i) गरीबों को खाना दो।
(ii) मेरे लिए दूध लेकर आओ।
(iii) माँ बेटे के लिए सेब लायी।
(iv) अमन ने श्याम को गाड़ी दी।
(v) मैं सूरज के लिए चाय बना रहा हूँ।
(vii) भूखे के लिए रोटी लाओ।
(viii) वे मेरे लिए उपहार लाये हैं।
(ix) सोहन रमेश को पुस्तक देता है।

*** अपादान कारक**

(i) पेड़ से आम गिरा।
(ii) हाथ से छड़ी गिर गई।
(iii) सुरेश शेर से डरता है।
(iv) गंगा हिमालय से निकलती है।
(v) लड़का छत से गिरा है।
(vi) पेड़ से पत्ते गिरे।
(vii) आसमान से बूँदें गिरी।
(viii) वह साँप से डरता है।
(ix) दूल्हा घोड़े से गिर पड़ा।
(x) चूहा बिल से बाहर निकला।
(xi) पृथ्वी सूर्य से दूर है।

*** संबंध कारक**

जैसे -

(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है।
(ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
(iii) यह सुरेश का भाई है।
(iv) यह सुनील की किताब है।
(v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे।
(vi) राजा दशरथ का बड़ा बेटा राम था।
(vii) लड़के का सिर दुःख रहा है।

*** अधिकरण कारक**

जैसे -

(i) हरी घर में है।
(ii) पुस्तक मेज पर है।
(iii) पानी में मछली रहती है।
(iv) फ्रिज में सेब रखा है।
(v) कमरे में अंदर क्या है।
(vi) कुर्सी आँगन में बिछा दो।
(vii) महल में दीपक जल रहा है।
(viii) मुझमें शक्ति बहुत कम है।
(ix) रमा ने पुस्तक मेज पर रखी।
(x) कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था।

(xi) तुम्हारे घर पर चार आदमी है।
(xii) उस कमरे में चार चोर हैं।

* संबोधन कारक

जैसे –

(i) हे ईश्वर ! रक्षा करो।
(ii) अरे ! बच्चो शोर मत करो।
(iii) हे प्रभु ! यह क्या हो गया।
(iv) अरे भाई ! यहाँ आओ।
(v) अजी ! तुम उसे क्या मारोगे ?
(vi) बाबूजी ! आप यहाँ बैठें।
(vii) अरे मुकेश ! जरा इधर आना।
(viii) अरे ! आप आ गये।

समास

1. द्वन्द्व समास

- माता-पिता
- भाई-बहन
- सुख-दुःख
- ऊँचा – नीचा

राम-कृष्ण
पाप-पुण्य
राजा- रंक
भला- बुरा

2. द्विगु समास

- नवरत्न
- त्रिभुवन
- त्रिफला
- शताब्दी

सप्तदीप
सतमंजिल
पंचवटी
सप्ताह

3. तत्पुरुष समास

मतदाता
- जन्मजात
- गुणहीन
- सत्याग्रह
- भयभीत
- प्रेमसागर
- भारतरत्न
- आत्मविश्वास

गिरहकट
मुँहमाँगा
हथकड़ी
धनहीन
जन्मान्ध
दिनचर्या
नीतिनिपुण
घुड़सवार

4. कर्मधारय समास

- कालीमिर्च
- पीताम्बर
- सद्गुण

नीलकमल
चन्द्रमुखी
महाराजा

- नीलगाय
- नीलकंठ

भलामानस
नीलांबर

5. अव्ययीभाव समास

यथास्थान
प्रतिदिन
भरपेट
निडर
हाथोंहाथ
यथामति

आजीवन
यथासमय
आमरण
दिनोंदिन
प्रतिदिन
भरसक

6. बहुव्रीहि समास

- महात्मा
- लम्बोदर
- चक्रधर
- चतुर्भूर्ज
- नीलकंठ

नीलकण्ठ
गिरिधर
चन्द्रशेखर
दशानन
त्रिनेत्र

➢ क्रियाविशेषण पहचान के उनके प्रकार के नाम लिखिए|

1-मैं अभी आ रहा हूं।- कालवाचक क्रियाविशेषण
2- वह संभवत चला गया है | - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3 -फिर कभी चलेंगे। - कालवाचक क्रियाविशेषण
4- जिधर देखो पानी ही पानी है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
5- मैं प्रात:काल उठ जाता हूँ | - कालवाचक क्रियाविशेषण
6 -पानी निरंतर बह रहा है। - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
7-भीतर जाकर बैठिए|- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
8- भाई अवश्य आएगा|- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
9- वह सवेरे टहलने जाता है |- कालवाचक क्रियाविशेषण
10- यहां से चले जाइए।- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
11- अधिक खेलना ठीक नहीं |- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
12- किधर जा रहे हो |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
13- मेरा घर इस ओर है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
14- थोड़ा थोड़ा अभ्यास कीजिए |- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
15- वह अधिक बोलता है|- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
16- दिन जल्दी जल्दी ढलता है।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
17- वह बाहर खड़ा है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
18- संभव है कि वह आए|- - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
19- वह मेरे घर बहुधा आता है |- कालवाचक क्रियाविशेषण
20- धीरे-धीरे चलिए |- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

➢ बहुविकल्पी प्रश्न

1. जिस वाक्य में भाव प्रधान हो, क्रिया एकवचन पुल्लिंग हो वह कहलाता है
   (i) भावानुसार वाच्य (ii) भाववाच्य
   (iii) कर्मवाच्य (iv) कर्तृवाच्य
2. जिस वाक्य में कर्म प्रधान हो, क्रिया कर्म के अनुसार आए वह होता है
   (i) कर्मवाच्य (ii) कर्तृवाच्य
   (iii) भाववाच्य (iv) कोई अन्य
3. जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो, क्रिया कर्ता के अनुसार आए तो वह होता है
   (i) कर्तावाच्य (ii) कर्तृवाच्य
   (iii) कर्मवाच्य (iv) भाववाच्य
4. वाच्य के कितने भेद होते हैं
   (i) तीन (ii) दो
   (iii) चार (iv) पाँच
5. जब क्रिया का प्रधान विषय कर्ता हो तो होता है
   (i) कर्मवाच्य (ii) भाववाच्य
   (iii) कर्तृवाच्य (iv) इनमें से कोई नहीं
6. जिस क्रिया में भाव की प्रधानता होती है, तब होता है-
   (i) भाववाच्य (ii) कर्मवाच्य
   (iii) कर्तृवाच्य

उत्तर-

1. (ii) 2. (i)
3. (ii) 4. (i)
5. (iii) 6. (i)

साहित्य-विभाग

➢ सही विकल्प चुनकर लिखिए |

1) नायक के रूप में सबसे पहले किसका चयन हुआ था?
   (a) विट्ठल (b) मेहबूब
   (c) जुबैदा (d) याकूब

2) सुदामा कहाँ जा रहे थे?
   (a) मंदिर (b) अपनी पत्नी के गाँव
   (c) अपने मित्र कृष्ण के पास (d) अपने पिता जी से मिलने

3) श्रीकृष्ण ने सुदामा की दशा कैसी देखी?
   (a) दयनीय (b) ठीक-ठाक
   (c) हीन (d) अच्छी

4) श्रीकृष्ण ने सुदामा के पाँव कैसे धोए?
   (a) परात में जल लेकर **(b) अपने अश्रु से**
   (c) साबुन से (d) गंगाजल से

5) सुदामा ने चावलों की पोटली कहाँ रखी हुई थी?
   (a) काँख में (b) बैग में
   (c) हाथ में (d) गठ्ठरी में

6) पुडुकोट्टई जिला किस प्रदेश में है?
(a) केरल (b) आंध्रप्रदेश
(c) तमिलनाडु (d) कर्नाटक
7) ग्रामीण महिलाओं ने साइकिल रूप में चुना है?
(a) स्वाधीनता (b) आजादी
(c) गतिशीलता **(d) उपर्युक्त सभी**
8) पुडुकोट्टई की गणना भारत के सर्वाधिक जिलों में की जाती है?
(a) शिक्षित (b) अशिक्षित
(c) खनिज से भरपूर (d) पिछड़े
9) लोटा नीचे किससे गिरा?
(a) झाऊलाल से (b) झाऊलाल की पत्नी से
(c) अंग्रेज़ से (d) बिलवासी से
10) पंडित बिलवासी जी क्यों आए थे?
(a) झाऊलाल से मिलने
(b) लाला झाऊलाल को ढाई सौ रुपये देने
(c) अंग्रेज़ का मित्र
(d) पुलिस
11) गोपी ने यशोदा को किसकी शिकायत की?
(a) बलराम (b) बाल सखा
(c) कृष्ण (d) पड़ोसी की
12) कृष्ण किस समय गोपियों के घर से मक्खन चुराते थे?
(a) प्रातः **(b) दोपहर**
(c) शाम (d) रात
13) सितार के तारों सी झंकार कहाँ-से उत्पन्न हुई थी?
(a) सितार से (b) पानी
(c) बूंद से (d) बादल से
14) बूंद किसके समान थी?
(a) चाँदी जैसी **(b) मोतियों जैसी**
(c) ओस जैसी (d) पानी के
15) समुद्र का भाग कौन बन चुकी थी?
(a) नदियाँ (b) मछलियाँ
(c) जल में रहने वाले पेड़ पौधे **(d) पानी की बूंद**
16) एक दिन अचानक साँप की गुफा में क्या गिर पड़ा?
(a) मोर (b) कबूतर
(c) बाज (d) गिद्ध
17) आकाश की ऊँचाइयों को नापने की बात कौन कर रहा है?
(a) मोर **(b) बाज**
(c) साँप (d) कबूतर
18) गवरा, गवरइया के शरीर को कैसा बता रहा है?
(a) मोटा ताजा (b) दुबला पतला
(c) अनगढ़ **(d) सुगढ़**

19) दरजी ने टोपी पर कितने फुदने लगाए ?

(a) पाँच फूंदने (b) चार फूंदने

(c) तीन फूंदने (d) दो फंदने

20) गवरइया ने राजा को कैसा बताया?

(a) अच्छा (b) बुरा

(c) डरपोक (d) सच्चा

➢ निम्नलिखित अतिलघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 'जब सिनेमा ने बोलना सीखा' पाठ के लेखक कौन हैं?

उत्तर – 'जब सिनेमा ने बोलना सीखा' पाठ के लेखक प्रदीप तिवारी जी हैं।

प्रश्न-2 विट्ठल किन भाषाओं की फिल्मों में नायक थे?

उत्तर – विट्ठल मराठी और हिंदी भाषाओं की फिल्मों में नायक थे।

प्रश्न-3 'आलम आरा' का संगीत किस फॉर्म में रिकॉर्ड नहीं किया गया?

उत्तर – 'आलम आरा' का संगीत डिस्क फॉर्म में रिकॉर्ड नहीं किया गया।

प्रश्न-4 विट्ठल के मुकदमा लड़ने वाले वकील का क्या नाम था?

उत्तर – विट्ठल के मुकदमा लड़ने वाले वकील का नाम मोहम्मद अली जिन्ना था।

प्रश्न-5 मुकदमा जीतने से विट्ठल को क्या लाभ हुआ?

उत्तर – मुकदमा जीतने से विट्ठल पहली बोलती फिल्म में नायक बने।

प्रश्न-6 'आलम आरा' फिल्म कब बनी और सर्वप्रथम कहाँ प्रदर्शित हुई?

उत्तर - यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुंबई के 'मैजेस्टिक' सिनेमा में प्रदर्शित हुई।

प्रश्न-7 विट्ठल फिल्मों में लम्बे समय तक किस रूप में सक्रिय रहे?

उत्तर – विट्ठल फिल्मों में लम्बे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे।

प्रश्न-8 अर्देशिर की कंपनी ने तकरीबन कितने फिल्में बनाई?

उत्तर – अर्देशिर की कंपनी ने भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अधिक मूक और लगभग सौ सवाक फिल्में बनाईं।

प्रश्न-9 पाठ में लेखक ने 'आलम आरा' की तुलना किस फैंटसी फिल्म से की है?

उत्तर – पाठ में लेखक ने 'आलम आरा' की तुलना 'अरेबियन नाइट्स' नामक फैंटसी फिल्म से की है।

प्रश्न-10 सवाक फिल्मों के लिए कैसे विषय को चुना गया?

उत्तर – सवाक फिल्मों के लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों, अरबी प्रेम कथाओं को विषय के रूप में चुना गया।

प्रश्न-11 'जहाँ पहिया है' के लेखक कौन हैं?

उत्तर – 'जहाँ पहिया है' के लेखक पी. साईनाथ जी हैं।

प्रश्न-12 'पुडुकोट्टई' किस राज्य में है?

उत्तर – 'पुडुकोट्टई' तमिलनाडु राज्य में है।

प्रश्न-13 अंग्रेज़ व्यक्ति ने लोटा कितने में खरीदा?

उत्तर – अंग्रेज़ व्यक्ति ने लोटा पाँच सौ रूपए में खरीदा।

प्रश्न-14 न्यूटन कौन थे?

उत्तर – न्यूटन इंग्लैंड के एक वैज्ञानिक थे जिन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम और गति के सिद्धांत की खोज की थी।

प्रश्न-15 जब अंग्रेज़ व्यक्ति पर लोटा गिरा तब वह कहाँ था?

उत्तर – जब अंग्रेज़ व्यक्ति पर लोटा गिरा तब वह एक दुकान से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियाँ खरीद रहा था।

प्रश्न-16 लेखक को ओस की बूँद कहाँ मिली?

उत्तर – लेखक को ओस की बूँद बेर की झाड़ी के पास मिली।

प्रश्न-17 ओस की बूँद ने समुद्र की गहरी तह में अपनी जान बचाने के लिए क्या किया?
उत्तर – ओस की बूँद ने भूमि में घुसकर अपनी जान बचाने की चेष्टा की।
प्रश्न-18 ओस की बूँद को कौन अपने पीठ पर लादे कभी इधर ले जाती कभी उधर?
उत्तर – ओस की बूँद को उसकी पुरानी सहेली अपने पीठ पर लादे कभी इधर ले जाती कभी उधर।
प्रश्न-19 ओस की बूँद जब समुद्र की गहरी तह में पहुँची तब उसने वहाँ क्या देखा?
उत्तर – ओस की बूँद जब समुद्र की गहरी तह में पहुँची तब उसने वहाँ छोटे ठिंगने और मोटे पत्ते वाले पेड़ अधिक संख्या में देखे। वहाँ पर पहाड़ियाँ और घाटियाँ भी थी, जहाँ नाना प्रकार के जीव निवास करते थे।
प्रश्न-20 साँप ने बाज़ को अभागा क्यों कहा?
उत्तर – साँप ने बाज़ को अभागा इसलिए कहा क्योंकि बाज़ ने आकाश की आज़ादी को प्राप्त करने में अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी।
प्रश्न-21 साँप अपनी गुफा से क्या - क्या देखा करता था?
उत्तर – अपनी गुफा में बैठा हुआ साँप सब कुछ देखा करता - लहरों का गर्जन, आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, टेढ़ी मेढ़ी बल खाती हुई नदी।
प्रश्न-22 गवरइया जब राजा के महल गई तब राजा क्या कर रहा था?
उत्तर – गवरइया जब राजा के महल गई तब राजा मालिश करवा रहा था।
प्रश्न-23 जब गवरइया धुनिया के पास गई तब वह क्या कर रहा था?
उत्तर – जब गवरइया धुनिया के पास गई तब वह राजा के लिए रजाई बनाने के काम में व्यस्त था।
प्रश्न-24 गवरइया ने धुनिया को मज़दूरी के रूप में क्या देने की बात कही?
उत्तर – गवरइया ने धुनिया को मज़दूरी के रूप में रुई का आधा हिस्सा देने की बात कही।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1) **सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई?**
उत्तर- सुदामा की हालत देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुख हुआ। दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले कि उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

2) अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए?
उत्तर- द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आएँ तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े-बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं वे घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चले आए। फिर सबसे पूछते फिरते हैं तथा अपनी झोपड़ी को ढूँढ़ने लगते हैं।

3) प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई?
उत्तर- प्रारम्भ में साइकिल आंदोलन चलाने में कुछ मुश्किलें आईं जैसे-

- सर्वप्रथम गाँव के लोग बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने महिलाओँ के उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया।
- महिलाओँ के साइकिल चलाने पर उन पर फ़ब्तियाँ कसी।

महिलाओँ के पास साइकिल शिक्षक का अभाव था, जिसके लिए उन्होंने स्वयं साइकिल सिखाना आरम्भ किया और आंदोलन की गति पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।

4) बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था?
उत्तर- बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपनी पत्नी के संदूक से चोरी करके निकाल कर किया था। यद्यपि चाबी उसकी पत्नी की सोने की चेन में बँधी रहती थी, पर उन्होंने चुपचाप उसे उतार कर ताली से संदूक खोल लिया था और रुपए निकाल लिए थे। बाद में वे रुपए चुपचाप वहीं रख भी दिए। पत्नी कुछ न जान पाई।

5) बालक कृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?
उत्तर- यशोदा माँ बालक कृष्ण को लोभ देती थी कि यदि वह नियम से प्रतिदिन दूध पीएँगे तो उनकी चोटी भाई बलराम की तरह लंबी और मोटी हो जाएगी। कृष्ण अपने बाल बढ़ाना चाहते थे इसलिए वह ना चाहते हुए भी

दूध पीने के लिए तैयार हो गए।

6) कृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर- कृष्ण अपनी चोटी के बारे में सोचते थे कि उनकी चोटी भी दूध पीने से बलराम भैया के जैसी लंबी-मोटी हो जाएगी। माता यशोदा हर रोज उन्हें पीने को दूध देती थी, फिर भी उनकी चोटी बढ़ नहीं रही थी।

7) तैं ही पूत अनोखौ जायौ" पंक्ति में ग्वालन के मन के कौन से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर- ये शब्द ग्वालन ने यशोदा से कहे। वह शिकायत करती हुई कहती है कि नटखट कृष्ण प्रतिदिन उनके घर से मक्खन चोरी करके खा जाते हैं। वह यशोदा से कहती हैं कि उन्होंने अनोखे पुत्र को जन्म दिया है जो दूसरों से अलग हैं।

8) ओंस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी?

उत्तर – ओंस की बूँद के अनुसार पेड़ की जड़ों के रोएँ बहुत निर्दयी होते हैं। वे बलपूर्वक जल-कणों को पृथ्वी में से खींच लेते हैं। कुछ को तो पेड़ एकदम खा जाते हैं और ज्यादातर पानी के जो कण हैं वो अपने असस्तिव को खो देते है और उनका सब कुछ छीन जाता है और पेड़ के द्वारा उन्हें बाहर निकाल दिया जाता है, यानी के वह अपना रूप खो देते हैं। यह सब बताते हुए ओंस की बून्द का शरीर क्रोध और घृणा से काँप रहा था।

9) हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज/पुरखा क्यों कहा?

उत्तर – ओस की बून्द लेखक को बताती है कि अरबों वर्ष पहले 'हाइड्रोजन' और 'ऑक्सीजन' के मिलने से वह पैदा हुई है। उन्होंने आपस में मिलकर अपना प्रत्यक्ष अस्तित्व गँवा दिया है और उसे उत्पन्न किया है। इसी कारण वह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को अपना पूर्वज/पुरखा कहती है।

10) घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा?

उत्तर – साँप का शत्रु बाज है चूँकि वो उसका आहार होता है। घायल बाज उसे किसी प्रकार का आघात नहीं पहुँचा सकता था इसलिए घायल बाज को देखकर साँप के लिए खुश होना स्वाभाविक था।

11) गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए?

उत्तर- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने इसलिये जड़ दिए क्योंकि उसने दर्जी को मजदूरी के रूप में आधा कपड़ा दे दिया था। खुश होकर उसने टोपी को और सुन्दर बना दिया था।

भारत की खोज

पाठ- 6 से 9

1) पंजाब में क्या लागू हुआ?

उ मार्शल लाँ

2) किसके नेतृत्व में कांगेस सक्रिय बनी?

उ गांधी जी के

3) गांधी जी मुलतः कैसे व्यक्ति थे?

उ धर्मप्राण

4) मिस्टर जिन्ना की माँग क्या थी?

उ भारत के दो राष्ट्र हो हिन्दू और मुसलमान

5) कग्रिस का विभाजन किन दो दलों में हुआ?

उ- कग्रिस का विभाजन 1) नरम दल और 2) गरम दल में हुआ।

6) मुस्लिम लीग के कर्णधार कौन थे?

उ- मुस्लिम लीग के कर्णधार मोहम्मद अली जिन्ना थे।

7) अंग्रेजो ने " मार्शल लॉ " कहाँ लागू किया?

उ- अंग्रेजो ने "मार्शल ली " पंजाब में लागू किया।
8) भारत में तनाव कब बढा?
उ- 1942 में
9) भारत छोड़ो प्रस्ताव कब और कहाँ हुआ?
उ मुंबई में 7,8 अगस्त 1942 को।
10) भारत के शहरों पर किस तरह के हमलों की संभावना थी?
उ- भारत के शहरों पर हवाई हमलों की संभावना बढ़ गई थी।
11)" भारत छोड़ो प्रस्ताव "पर किसने विचार प्रस्तुत किया था?
उ- अखिल भारतीय कांग्रेस ने " भारत छोड़ो प्रस्ताव "पर विचार प्रस्तुत किया।
12) किसके नेतृत्व में जन-आंदोलन शुरु करने की बात कही गई?
उ- गांधीजी के नेतृत्व में जन-आंदोलन शुरु करने की बात कही गई।
13) भारत की बीमारी क्या थी?
उ अकाल
14) भारत किससे बीमार था?
उ तन और मन दोनों से।
15) " अंतिम दौर-एक "पाठ के आधार पर कौन अपने ही देश में गुलाम हो गया?
क) इंग्लैड **ख) भारत** ग) अमेरिका घ) चीन
16) कौन अपने मूल और चरित्र दोनों ही रुपी में स्थाई रुप से विदेशी थे?
क) अंग्रेज ख) भारतीय ग) मराठा घ) चीनी
17) ब्रिटिश सरकार के कौन से दो विशेष महकमे थे?
क) जमीदार और किसान ख) पुलिस और जमीदार
ग) किसान और पुलिस **घ) मालगुज़ारी और पुलिस**
18) अंग्रेजी शासन काल में भारत ने किन क्षेत्रों में उन्नति की?
क) रेलगाड़ी ख) छापाखाना ग) डाकतार विभाग **घ) उपर्युक्त सभी**
19) 18 वीं शताब्दी में बंगाल में किस प्रभावशाली व्यक्तित्व का उदय हुआ?
क) राजा राममोहन राय ख) स्वामी दयानंद सरस्वती
ग) रामकृष्ण परमहंस घ) महात्मा गांधी
20) राजा राममोहन राय के व्यक्तित्व में किसका मेल था?
क) विचारों का ख) संस्कृति का ग) भावों का **घ) नवीन ज्ञान**
21) राजा राममोहन राय की मृत्यु किस देश में हुई थी?
क) भारत में ख) अमेरिका में ग) रुस में **घ) इंग्लैड में**
22) भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कब हुआ था?
क) 1825 में **ख) 1857 मे** ग) 1847 में घ) 1835 में
23) " आर्य समाज " की स्थापना किसने की?
क) राजा राममोहन राय **ख) दयानंद सरस्वती**
ग) रामकृष्ण परमहंस घ) स्वामी विवेकानंद

24) स्वामी विवेकानंद के गुरु का नाम क्या था?

क) राजा राममोहन राय　　ख) दयानंद सरस्वती

ग) रामकृष्ण परमहंस　　घ) महात्मा गांधी

25) " मेरी आंकाक्षा है हर आँख से हर आँसू को पोंछ लेना ।" ये शब्द किसने कहे थे?

क) महात्मा गांधी　　ख) राजा राममोहन राय

ग) अबुल कलाम आजाद　　घ) मोहम्मद अली जिन्ना

* दीर्घ उत्तर प्रश्न

1) भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद? कामचोर कहानी के आधार पर निर्णय कीजिए।

उ- यदि सारा-परिवार मिल जुलकर कार्य करे तो घर को सुखद बनाया जा सकता है। इससे घर के किसी भी सदस्य पर अधिक कार्य का दबाव नहीं पड़ेगा। सब अपनी अपनी कार्यक्षमता के आधार पर कार्य को बाँट लें व उसे समय पर निपटा लें तो सब को एक दूसरे के साथ वक्त बिताने का अधिक समय मिलेगा इससे सारे घर में आपसी प्रेम का विकास होगा और खुशहाली ही खुशहाली होगी। इसके विपरीत यदि घर के सदस्य घर के कामों के प्रति बेरूखा व्यवहार रखेंगे और किसी भी काम में हाथ नहीं बटाएँगे तो सारे घर में अशांति ही फैलेगी, घर में खर्च का दबाव बनेगा, घर के सभी सदस्य कामचोर बन जाएँगे और अपने कामों के लिए सदैव दूसरों पर निर्भर रहेंगे जिससे एक ही व्यक्ति पर सारा दबाव बन जाएगा। यदि इन सबसे निपटने की कोशिश की गई तो वही हाल होगा जो कामचोर में घर के बच्चों ने घर का किया था। वे घर की शन्ति व सुःख को एक ही पल में बर्बाद कर देंगे। इसलिए चाहिए कि बचपन से ही बच्चों को उनके काम स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए ताकि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाया जाए और घर के प्रति ज़िम्मेदार भी।

2) बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता-पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार? कामचोर कहानी के आधर पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उ-अगर बच्चों को बचपन से अपना कार्य स्वयं करने की सीख दी जाए तो बड़े होकर बच्चे माता-पिता के बहुत बड़े सहयोगी हो सकते हैं। वह अगर अपने आप नहा धोकर स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने जुराब स्वयं धो लें व जूते पालिश कर लें, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें तो माता-पिता का बहुत सहयोग कर सकते हैं। यदि इससे उलटा हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता-पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भांति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था।

3)"चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?

इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

इस उपालंभ "शिकायत" के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर-यहाँ श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं कि तुम्हारी चोरी करने की आदत या छुपाने

की आदत अभी तक गई नहीं। लगता है इसमें तुम पहले से अधिक कुशल हो गए हो। सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप कुछ चावल भिजवाए थे। संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को यह भेंट नहीं दे पा रहे हैं। क्योंकि कृष्ण अब द्वारिका के राजा हैं और उनके पास सब सुख-सुविधाएँ हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो। इस शिकायत के पीछे एक पौरोणिक कथा है। जब श्रीकृष्ण और सुदामा आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। उस समय एक दिन वे जंगल में लकड़ियाँ चुनने जाते हैं। गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लेते हैं। उसी चोरी की तुलना करते हुए श्रीकृष्ण सुदामा को दोष देते हैं।

4) "साइकिल आंदोलन" से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन-कौन से बदलाव आए हैं?

उत्तर- साइकिल आंदोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कई बदलाव आए हैं-

- साइकिल आंदोलन से महिलाएँ छोटे-मोटे बाहर के काम स्वयं करने लगी।
- साइकिल आंदोलन से वे अपने उत्पाद कई गाँव में ले जाकर बेचने लगी।
- साइकिल आंदोलन से उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी है।
- साइकिल आंदोलन से समय और श्रम की बचत हुई है।
- साइकिल आंदोलन ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया।

5) प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई?

उत्तर- प्रारम्भ में साइकिल आंदोलन चलाने में कुछ मुश्किलें आईं जैसे-

- सर्वप्रथम गाँव के लोग बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने महिलाओँ के उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया।
- महिलाओँ के साइकिल चलाने पर उन पर फ़ब्तियाँ कसी।
- महिलाओँ के पास साइकिल शिक्षक का अभाव था, जिसके लिए उन्होंने स्वयं साइकिल सिखाना आरम्भ किया और आंदोलन की गति पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।

6) पं बिलवासी मिश्र कहाँ आते दिखाई पड़े? उन्होंने आते ही क्या किया? उन्होंने अंग्रेज के साथ किस प्रकार सहानुभूति प्रकट की?

उत्तर-पं बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने आते ही पहला काम यह किया कि उस अंग्रेज को छोड़ कर बाकी जितने लोग थे सबको बाहर कर रास्ता दिखाया और फिर आगँन में कुर्सी रखकर उन्होंने उस अंग्रेज से कहा कि उसके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है। इसलिए वह आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए। जब पं बिलवासी ने अंग्रेज को बैठने को कहा तो अंग्रेज बिलवासी जी को धन्यवाद देते हुए बैठ गया। लाला झाऊलाल की ओर इशारा करके अंग्रेज ने बिलवासी जी से पूछा कि क्या वे लाला को जानते हैं? बिलवासी बिलकुल मुकर गए और कहते हैं कि वे लाला को बिलकुल नहीं जानते और न ही वह ऐसे आदमी को जानना चाहते हैं जो राह चलते व्यक्तियों को लोटे से चोट पहुँचाए।

7) द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे?

उत्तर- द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा का मन बहुत दुखी था। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किए गए व्यवहार के बारे में सोच रहे थे कि जब वे कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण ने आनन्द पूर्वक उनका आतिथ्य सत्कार किया था। क्या वह सब दिखावटी था? वे कृष्ण के व्यवहार से खीझ रहे थे क्योंकि केवल आदर-सत्कार करके ही श्रीकृष्ण ने सुदामा को खाली हाथ भेज दिया था। वे तो कृष्ण के पास जाना ही नहीं चाहते थे। परन्तु उनकी पत्नी ने उन्हें जबरदस्ती मदद पाने के लिए कृष्ण के पास भेजा। उन्हें इस बात का पछतावा भी हो रहा था कि माँगे हुए चावल जो कृष्ण को देने के लिए भेंट स्वरूप लाए थे, वे भी हाथ से निकल गए और कृष्ण ने उन्हें कुछ भी नहीं दिया।

8) "पानी की कहानी" के आधार पर पानी के जन्म और जीवन-यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

उत्तर – "पानी की कहानी" के आधार पर पानी का जन्म अरबों वर्ष पहले 'हाइड्रोजन' और 'ऑक्सीजन' के मिलने से पानी का जन्म हुआ और तब से लेकर पानी की जीवन यात्रा बहुत ही विचित्र रही है। जन्म के बाद पानी ने ठोस रूप बर्फ का रूप लिया और गर्म धारा के द्वारा तरल रूप ले लिया। वहां से समुद्र के तल तक यात्रा कर के जमीन के द्वारा ज्वालामुखी तक पहुँच गया और वहां पर गर्मी के कारण वाष्प रूप ले लिया और आकाश में आंधी के साथ मिल गया। अधिक वाष्प कण हो जाने पर बारिश के रूप में वापिस पृथ्वी पर आ गया। वहाँ से नदियों के सहारे दोबारा जमीन द्वारा सोख लिया गया और पेड़ों द्वारा वाष्पीकरण से दोबारा भाप की स्थिति में आ कर वायुमंडल में घूमने लगा।